Syllabus for the Recruitment Test for the post of

Assistant Professor (College Cadre) in the subject of

Sanskrit

विषय : संस्कृत

पाठ्यक्रम

इकाई—I : वैदिक साहित्य :

(क) संहिताएँ : निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययनः—

1. ऋग्वेद— अग्नि [1.1] ; सवितृ [1.35] ; विष्णु [1.154] ; इन्द्र [2.12] ; रुद्र [2.33] ; बृहस्पति [4.50] ; उषाः [5.80] ; वरुण [7.88] ; सोम [9.80] ; पुरुष [10.90] ; हिरण्यगर्भ [10.121] ; वाक् [10.125] ; नासदीय [10.129] ।

संवाद सूक्त— विश्वामित्र-नदी [3.33] ; यम-यमी [10.10] ; पुरुरवा-उर्वशी [10.95] ; सरमा-पणि [10.108] ।

2. अथर्ववेद— पृथिवी [12.1] ।

(ख) ब्राह्मण एवम् आरण्यक : सामान्य लक्षण ; विशेषताएँ ; आख्यान— शुनःशेप ; पञ्चमहायज्ञ ।

(ग) उपनिषद् : विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन, विशेषतः निम्नलिखित उपनिषदों के सन्दर्भ में :

ईश ; केन ; कठ ; बृहदारण्यक ; तैत्तिरीय ।

(घ) वेदाङ्ग : निम्नलिखित वेदाङ्गों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय :

शिक्षा ; कल्प ; व्याकरण ; निरुक्त ; छन्दः ; ज्योतिष ।

(ङ) निरुक्त (अध्याय 1 और 2) :

चार पद— नाम का विचार ; आख्यात का विचार ; उपसर्गों के अर्थ ; निपातों की कोटियाँ । क्रिया के छह रूप (षड्भावविकार) । निरुक्त के अध्ययन के उद्देश्य । निर्वचन के सिद्धान्त ।

निम्नलिखित शब्दों के निर्वचन :

आचार्य ; वीर ; ह्रद ; गो ; समुद्र ; वृत्र ; आदित्य ; उषस् ; मेघ ; वाक् ; उदक ; नदी ; अश्व ; अग्नि ; जातवेदस् ; वैश्वानर ; निघण्टु ।

निरुक्त (अध्याय 7—दैवत काण्ड) :

मन्त्रों के प्रकार । देवताओं का स्वरूप । देवताओं की संख्या ।

Continued on page 2

(च) वैदिक व्याकरण एवं वेद-व्याख्या-पद्धति :

पदपाठ। स्वर— उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर। वैदिक व्याख्या-पद्धति— प्राचीन एवम् अर्वाचीन।

(छ) वैदिक साहित्य का इतिहास :

वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त— मैक्समूलर ; ए० वेबर ; जैकोबी ; बालगंगाधर तिलक ; एम्० विन्टरनिट्ज ; भारतीय परम्परागत विचार।

इकाई—II : व्याकरण एवं भाषाविज्ञान :

(क) व्याकरण :

I. वरदराज-कृत लघुसिद्धान्तकौमुदी—

1. परिभाषाएँ : संहिता ; गुण ; वृद्धि ; प्रातिपदिक ; नदी ; घि ; उपधा ; अपृक्त ; गति ; पद ; विभाषा ; सवर्ण ; टि ; प्रगृह्य ; सर्वनामस्थान ; निष्ठा।
2. समास : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि।

II. भट्टोजिदीक्षित-कृत सिद्धान्तकौमुदी—

1. तिङन्त प्रकरण— √भू एवम् √एध् : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि।
2. परस्मैपद-विधान : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या।
3. आत्मनेपद-विधान : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या।
4. कृदन्त प्रकरण (कृत्य प्रक्रिया मात्र) : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि।
5. तद्धित प्रकरण (मत्वर्थीय मात्र) : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि।
6. कारक प्रकरण : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक कारक एवं विभक्ति का प्रतिपादन।
7. स्त्री प्रत्यय : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि।

(ख) भाषाविज्ञान :

1. भाषा की परिभाषा एवं प्रकार।
2. भाषा तथा वाक् में अन्तर।
3. भाषा और बोली में अन्तर।
4. वाक्य का लक्षण तथा भेद।
5. भाषाओं का वर्गीकरण (परिवारमूलक एवम् आकृतिमूलक)।

Continued on page 3

6. भारोपीय भाषा-परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय।
7. भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएँ।
8. भाषा-प्रक्रिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर एवं स्वर।
9. संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय ध्वनि-यन्त्र।
10. ध्वनि-परिवर्तन के कारण।
11. ध्वनि-नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर)।
12. अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण।

इकाई—III : दर्शन :

I. ईश्वरकृष्ण-कृत सांख्यकारिका : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
सत्कार्यवाद ; पुरुष-स्वरूप ; प्रकृति-स्वरूप ; सृष्टिक्रम ; प्रत्ययसर्ग ; कैवल्य ।

II. सदानन्द-कृत वेदान्तसार : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
अनुबन्ध-चतुष्टय ; अज्ञान ; अध्यारोप-अपवाद ; लिङ्गशरीरोत्पत्ति ; पञ्चीकरण ; विवर्त ; जीवन्मुक्ति।

III. केशवमिश्र-कृत तर्कभाषा : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
पदार्थ ; कारण ; प्रमातृ ; प्रमेय ; प्रमाण (प्रत्यक्ष ; अनुमान ; उपमान ; शब्द) ; प्रमिति।

IV. लौगाक्षिभास्कर-कृत अर्थसंग्रह : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न।

V. योगसूत्र : व्यासभाष्य—
चित्तभूमि ; चित्तवृत्तियाँ ; ईश्वर का स्वरूप ; योगाङ्ग ; समाधि ; कैवल्य की अवधारणाओं का अध्ययन।

इकाई—IV : संस्कृत साहित्य एवं काव्यशास्त्र :

I. संस्कृत साहित्य :
व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—

1. पद्य : रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग); मेघदूत ; किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग) ; शिशुपालवध (प्रथम सर्ग) ; नैषधीयचरित ; बुद्धचरित।
2. गद्य : दशकुमारचरित (अष्टमोच्छ्वासः) ; हर्षचरित ; कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्तः)।

Continued on page 4

3. नाटक : स्वप्नवासवदत्ता ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; मृच्छकटिक ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली ; वेणीसंहार ।

4. रामायण एवं महाभारत : समीक्षात्मक प्रश्न—

(क) रामायण :

रामायण का क्रम । रामायण में आख्यान । रामायणकालीन समाज । परवर्ती ग्रन्थों के लिये रामायण एक प्रेरणा-स्रोत । रामायण का साहित्यिक महत्त्व ।

(ख) महाभारत :

महाभारत का क्रम । महाभारत में आख्यान । महाभारतकालीन समाज । परवर्ती ग्रन्थों के लिये महाभारत एक प्रेरणा-स्रोत । महाभारत का साहित्यिक महत्त्व ।

II. काव्यशास्त्र :

1. काव्यप्रकाश—

काव्यलक्षण ; काव्यप्रयोजन ; काव्यहेतु ; काव्यभेद ।

अलंकार— अनुप्रास ; श्लेष ; वक्रोक्ति ; उपमा ; रूपक ; उत्प्रेक्षा ; समासोक्ति ; अपह्नुति ; निदर्शना ; अर्थान्तरन्यास ; दृष्टान्त ; विभावना ; विशेषोक्ति ; संकर ; संसृष्टि ।

2. साहित्यदर्पण—

काव्य की परिभाषा ; काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन ।

शब्दशक्ति— संकेतग्रह ; अभिधा ; लक्षणा ; व्यञ्जना ।

रस (रस-भेद स्थायी भावों सहित) ।

रूपक के प्रकार ।

नाटक के लक्षण ।

महाकाव्य के लक्षण ।